Lecture - 139.

संथाल विद्रोह

- Mamta Rani
Guest Assistant Professor
Deptt. of History.
SNSRK College,
Saharsa

BA Part - III rd.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

संथाल विद्रोह

प्र. "संथाल विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अत्यंत तीव्र प्रतिक्रिया थी।" वर्णन करें। (अ)

प्र. संथाल विद्रोह के कारण, परिणाम का संक्षिप्त रूप से उल्लेख कीजिए। (अ)

प्र. संथाल विद्रोह के कारण, कार्यक्रम और असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- भारत प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्म, जाति एवं सम्प्रदाय वाला देश है जिसको अनेकता मे एकता वाला राष्ट्र भी कहा जाता है। इन्ही मे से संथाल जनजाती भी भागलपुर से लेकर राजमहल की पहाड़ियों वाले क्षेत्र मे निवास करती थी जिस क्षेत्र को दामन-ए-कोह कहा गया। 1857 के विद्रोह के ठिक पहले संथालो ने विद्रोह किया था जिसको निम्नलिखित रूपो मे देखा जा सकता है।

संथाल विद्रोह

कारण	कार्यक्रम	असफलता के कारण	परिणाम या प्रभाव
* नई भूमि व्यवस्था	* सरकारी कार्यालय महाजन, साहुकारो पर आक्रमण	* अंधविश्वास	* 1856 का अधि०
* धार्मिक कारण	* अपनी माँग का समर्थन मे हिंसात्मक आ०	* सीमित संसाधन	* आर्थिक सामाजिक छूट
* करार पत्र श्रमिक अधिनियम		* नेतृत्व का अभाव	* नए आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त।
* सामाजिक कारण 50% - 500%			

संथाल विद्रोह या अधिकांश जनजाती विद्रोह का कारण लगभग एक समान है। जैसे-

संथाल लोग पूर्ण रूप से वन सम्पदा पर आश्रित थे जहाँ से इन्हे शिकार, फलमूल, सिमित पैमाने पर कृषि और लकड़ी इत्यादि की सुविधा प्राप्त था लेकिन बाहरी लोगो की प्रवेश इनकी आर्थिक स्थिति को बिल्कुल दैयनिय बना दिया। इसकी झुम और पडु की कृषि ~~अक्रम~~ प्रभावित हो गई व तब इन्होने विद्रोह का सहारा लिया।

1813 ई० के अधिनियम के बाद भारत मे इसाई मिशनरियो ने सबसे अधिक आदिवासी क्षेत्र मे अपने धर्म का विस्तार किया जैसे ही संथालो के धार्मिक जीवन मे हस्तक्षेप किया गया

इनलोगो ने अपना नेता का चुनाव कर विद्रोह कर दिया।

इतिहासकारों का यह मानना है एक बार संथाल करारा पत्र पर हस्ताक्षर कर देते थे तब वही से वह साहूकार एवं महाजनों के चंगुल मे फंस जाते थे और कभी भी बाहर नही निकल पाते थे। इनसे 50 प्रतिशत से 500 प्रतिशत तक ब्याज वसूला गया औ विद्रोह का कारण बना।

सामाजिक कारण के रूप मे भेद-भाव, छुआ-छुत और साथ मे अनैतिक कार्यों ने इस विद्रोह को शुरू करने मे मुख्य भूमिका निभा दिया।

सिद्धु, कान्हू, चाँद एवं भैरव चारो भाई के नेतृत्व मे 1855 ई० मे पंचकिठिया नामक स्थान पर लगभग 1000 संथाल एकत्रित हुए और इसके साथ पाकुड़ से भी विद्रोह शुरू कर भी विद्रोह शुरू कर दिया गया। दिग्घी थाना के दरोगा महेशलाल और कुरहरिया थाना के प्रतापनारायण की हत्या करके अपने गुस्से का इजहार संथाल लोगो ने किया। सरकारी कार्यालय, महाजन एवं शाहुकारो के घरो पर हमला करना और अपनी माँग को मनवाने के लिए किसी भी हद तक की हिंसा कार्यक्रम मे शामिल था। अंग्रेज अधिकारी बाड्रर्स बच गए लेकिन पिरपैतिक के युद्ध मे बारोज पराजित हुए। यह संथालो की बहुत बडी जीत थी। अन्तत: पी० लोगुउ के नेतृत्व मे संथाल पराजित हुए। चारो भाइयो की हत्या कर दिया गया और यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

संथाल विद्रोह अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल नही रहा। इसकी असफलता मे अंधविश्वास, सीमित संसाधन और नेतत्व का आभाव शामिल किया जाता है। अंधविश्वास और परंपरागत हथियार तथा कम संसाधन के बल पर अंग्रेजो से किसी भी प्रकार नही जीता जा सकता था

यह आन्दोलन भले ही असफल हो गया लेकिन हम यह कह सकते है कि 1857 के विद्रोह के ठिक पहले यह सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह था क्यो इसी विद्रोह की देन था कि सरकार ने सरकार ने 1856 ई० मे संथाल परगना अधिनियम पारित किया तथा आर्थिक और समाजिक स्तर पर संथालो को बहुत अधिक छुट दिया गया। सबसे बडी विशेषता इस आन्दोलन का यह था कि इसने आनेवाले आन्दोलन का मार्ग तैयार कर दिया इस लिए संथाल आ० निश्चित रूप से ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रथम तीव्र अतिक्रिया थी। ***

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz